I shall request Member, to rise in their seats for a minute as a mark of respect to the memory of Shri Maithilisharan Gupta.

(Hon. *Members then stood in tilence for one minute)*

Secretary will convey to the members of the bereaved! family th« profound sorrow and sympathy of this House.

ANNOUNCEMENT *RE.* ALLOTMENT OF TIME FOR THE CONSIDERATION OF THE MINERAL OILS (ADDITIONAL DUTIES OF EXCISE AND CUSTOMS) AMENDMENT BILL, 1964

MR. CHAIRMAN: I have to inform Members that under rule 186(2) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I have allotted one hour for the compMion of all stages involved in the consideration and return of the Mineral Oils (Additional Duties of Excise and Customs) Amendment Bill, 1964, by the Rajya Sabha, including the consideration and passing of amendments, if any, to the Bill.

THE APPROPRIATION (NO. 6) BILL, 1964—contd.

MR. CHAIRMAN: Mr. Chordia. Before they begin, I hope that Members know that they will have to confine themselves to ten minutes each.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया (मध्य प्रदेश) : अध्यक्ष महोदय, जो पूरक अनुदानें प्रस्तुत की गई हैं उनके सम्बन्ध में सब से पहले मैं शिक्षा आयोग के बारे में चर्चा करना चाहूंगा। शिक्षा आयोग की नियुक्ति और उसके लिए जो विदेशों से सहयोग लेने की भावना इसमें प्रकट की है उससे मझे बहुत दुख होता है कि एक समय था कि भारतवर्ष जगतगुरु के स्थान पर था और आज वह भारत बाहर के लोगों से भीख मांग रहा है शिक्षा प्राप्त करने के लिए, एक समय था जब कि यह देश सोने की चिड़िया कहा जाता था और आज हमको भीख मांगनी पड़ रही है बाहर से अनाज के लिए, खाने के लिए, धन के लिए, सब बातों के लिए; और शिक्षा के मामले में भी हम बाहर वालों का मुंह देखें क्या हमारे यहां शास्त्री नहीं हैं, क्या हमारे यहां आचार्य नहीं हैं, क्या हमारे यहां पंडित नहीं हैं लेकिन चूंकि उनके पास डाक्टरेट का लेबिल नहीं है इसलिये उनकी पूछ नहीं है उनके सामने जो कि डाक्टरेट के लेबिलधारी हैं या जो कि विदेशों से अपनी शिक्षा ग्रहण कर के आते हैं। तो ऐसी स्थिति में मैं प्रार्थना करूंगा कि अगर हम चाहते हैं कि हमारा जो सुप्त भारत है वह जाग्रत हो, अगर हमें भारत की सोई हुई आत्मा पर जो राख का आवरण जम चुका है उसे जाग्रत करना है, तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे यहां जो मनीषी हैं, विद्वान हैं, पंडित हैं, शास्त्री हैं उनका सहयोग एजुकेशन कमिशन में लें और उसके बाद जो भी सिफारिशें की जाने वाली हैं उनको कार्यान्वित करें।

अध्यक्ष महोदय, इसमें जो जानकारी दी गई है कि कमिशन के कौन कौन सदस्य होंगे उसको देख कर के कुछ ऐसा लगता है कि जिनका शिक्षा के क्षेत्र में अभी तक नाम तक नहीं सुना गया ऐसे लोगों को इसमें शामिल किया गया है और उनसे अपेक्षा यह है कि उनके द्वारा हमारी शिक्षा की व्यवस्था का अध्ययन हो। हमारे पूर्व वक्ता सिन्हा साहब ने हिन्दी के बारे में बहुत अच्छा कहा था कि हिन्दी की लहर तेजी से आगे बढ़ रही है और उसकी तेजी को कोई रोक नहीं सकता किन्तु ये कंकड़ और पत्थर उसके प्रवाह को रोकने का प्रयत्न कर रहे हैं। प्रार्थना है कि उनका हित इसमें है कि

[श्री विमलकुमार मन्नीलालजी चोरडिया]

वे अपने आप हट जांय अन्यथा उनको नुकसान होगा । आज जो हमारे शिक्षा मंत्री का रवैया है और जो अखबारों में इसके बारे में प्रकाशन होता है, प्रदर्शन होता है और सब कुछ चलता है, उससे ऐसा लगता है कि अभी तक जो अपने आप को अंग्रेजी का मानसपुत्र कहते हैं और जो कि चाहते हैं कि हमारे यहां अंग्रेजी कायम रहे वह किसी भी तरह से इसको बदस्तूर बनाये रखना चाहते हैं ।

अध्यक्ष महोदय, हमारे यहां हमारे राज्य की एक भाषा होगी मगर साथ ही प्रान्तों की भाषाएं भी उसके साथ साथ चलेंगी, ऐसा तो नहीं है कि केवल एक भाषा ही चल जायें । हमारे दक्षिण भारत के तथा बंगाल के लोगों का बहाना दिया जाता है कि दक्षिण भारत के लोग हिन्दी को आने देना नहीं चाहते और उसके प्रति उनका आकर्षण नहीं है, तो मैं एक प्रश्न पूछता हूं कि क्या वे अंग्रेजी को पसन्द करते हैं, क्या वे हिन्दुस्तानी को, हिन्दी को नहीं चाहते हैं तो क्या हमेशा के लिए अंग्रेजी को चाहते हैं, सम्भवतः यह उनका पुराना मोह है, संस्कार है और इसीलिये संभवतः आज भी ऐसा कहते हैं कि हमको अंग्रेजी प्रिय है और भारत की हिन्दी प्रिय नहीं है लेकिन आगे चल कर ऐसा नहीं हो सकता कारण विदेशी भाषा की तुलना में स्वदेशी भाषा ही प्रिय होगी । इसलिये हमारी प्रार्थना है कि हमारी सरकार शिक्षा आयोग में ऐसे लोगों के प्रतिनिधित्व पर विचार कर के शिक्षा आयोग के माध्यम से ठीक व्यवस्था करे ।

अध्यक्ष महोदय, शक्कर के बारे में भी इसमें मांग की गई है सबसिडी के लिए । शक्कर के मामले में जो घाटा हुआ है उसके लिए मांग की है और फिर इसमें इतने प्रेम से लिखते हैं कि हमको १८ करोड़ की विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई । मैं मंत्री महोदय से एक प्रश्न पूछना चाहता हूं कि जितनी शक्कर हमने यहां से निर्यात की उतनी शक्कर के उत्पादन में कितने एकरेज खेती को हमने काम में लिया और उस एकरेज में अगर हम अनाज बोते, अनाज पैदा करते तो कितने टन अनाज पैदा होता और उसके बदले में यह विदेशी मुद्रा जो हमको शक्कर की वजह से मिली अनाज की वजह से कितनी बचती । जैसे कि ३१५.८४ करोड़ रुपये का अनाज इसी वर्ष विदेशों से हमें मंगाना पड़ा तो क्या वे शक्कर के खेत १८ करोड़ रुपये का अनाज भी पैदा नहीं कर सकते थे । अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार की नीति बिल्कुल अनियोजित है या सुनियोजित रूप से जनता को काट देने के लिए है । शक्कर हमारे यहां बहुत पैदा होती है, यहां सरप्लस है और यहां के आदमी चिल्लाते हैं कि शक्कर नहीं मिलती है, चीनी नहीं मिलती है । शक्कर ऐसी चीज नहीं है कि भंडार में पड़े पड़े सड़ जाय, शक्कर ऐसी चीज नहीं है कि उसको घुन लग जाय मगर हमारी सरकार की ऐसी गलत नीति है जिसके परिणाम स्वरूप शक्कर सरप्लस है, विदेशों को जाती है और हमारे यहां आदमी उसको लेने के लिए घंटों क्यू लगाए खड़े रहते हैं और इस तरह से हमारे देश की बहुत बड़ी शक्ति का अपव्यय होता है, और हम अपने संतोष के लिए कहते हैं कि हमको १८ करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त हो गई । यदि उतने क्षेत्रफल में हम अनाज बोते, तो सम्भवतः और ज्यादा अनाज पैदा करते और यह जो ३१५ या ३१८ करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा खर्च हुई अनाज मंगाने में उसमें से कुछ ज्यादा ही बच जाती और इसी मुद्रा को हम कोई और चीज मंगवा सकते थे । तो इस दृष्टि से हमारे शासन को विचार करना चाहिये । लगातार तीन चार वर्षों से घाटा पड़ रहा है, पहले ५९ नये पैसे की

सबसिडी दी गई, दूसरे वर्ष ५.५ करोड़ का और तीसरे वर्ष १४.५० करोड़ का घाटा उठाया लेकिन इस घाटे को उठा कर भी हमारी सरकार कहती है, आश्वासन देती है, कि हमें विदेशी मुद्रा मिल रही है। तो ऐसी विदेशी मुद्रा लाने की अपेक्षा हम उन क्षेत्रों में अनाज का उत्पादन ही करेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा।

पुनर्वास विभाग की तो हमारे यहां पर इतनी भयंकर अव्यवस्था है कि वहां पर कई वर्षों से पुरुषार्थियों के—जिनको शरणार्थी कहते हैं— क्लेम्स पड़े हुए हैं, क्लेम तो सेटिल भी हो गये हैं मगर जब तक कि कोई बीच का दलाल उस डिपार्टमेंट में जा कर के उनकी ख्वाहिश न पूरी करे तब तक फाइल हां नहीं निकलती है, उनकी भेंट पूजा नहीं करते, या तो टर्म उस रिश्वत का है कि फीसन के लिए पैसा नहीं देते, तब तक उनकी फाइल का निर्णय नहीं होता। मेरे यहां के बेचारे कई ऐसे लोग हैं जिनका हजारों रुपये का क्लेम मंजूर हो चुका है मगर वे बरतन मांज मांज कर, गधे चरा चरा कर, लकड़ियां काट काट कर अपनी उदरपूर्ति करते हैं मगर यहां के पुनर्वास विभाग को उन पर दया नहीं आई। एप्लाई एप्लाई स्लोली रिप्लाई, इतने दिन गुजर जाने के बाद कहीं जवाब आता है। मेरे यहां कई केस हैं, एक पुन्नो बाई बेचारी है, वह बरतन मांज मांज कर अपना काम चला रही है, उसका क्लेम बहुत पहले मंजूर हो चुका है मगर हमारी यह सरकार उस पर अभी भी निर्णय नहीं कर सकी है और उसको क्लेम नहीं मिल रहा है। ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। पुनर्वास विभाग में जो हैं वह या तो इसकी ठीक व्यवस्था करें या उस विभाग में जो हैं उनकी शक्ति का दूसरी जगह उपयोग कीजिये, उन कर्मचारियों को दूसरी जगह ले जाइये, मगर हमारे धन का, हमारी जनता का ऐसा दुरुपयोग हो यह कभी भी न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता।

अणु-शक्ति के बारे में निवेदन है कि यदि हम सचमुच में गांधी जी के भक्त अपने को मानते हैं, तो अहिंसा के आधार पर बिल्कुल अणु बम की बात छोड़ कर के रघुपति राघव राजा राम, ईश्वर अल्ला तेरे नाम गाते हुये चीन के यहां जाना है और उससे कहना है कि तुमको डिसआर्मामेंट करना पड़ेगा, तुम अणु बम बना नहीं सकते, हमको मार डालो या तुम अणु बम न बनाओ, या तो हम अहिंसा में पूरी श्रद्धा रखें नहीं तो हमको शक्ति रखनी पड़ेगी, या तो अहिंसा की शक्ति रखें या हिंसा की शक्ति रखें। तो आपको शक्ति रखनी पड़ेगी। फिर हमारे हाथों में, अहिंसक हाथों में, अणु बम की शक्ति है, तो उससे हम किसी का नुकसान करेंगे ऐसी कल्पना नहीं की जानी चाहिये। ऐसी स्थिति में यह अत्यंत आवश्यक है कि अपने देश की सुरक्षा के लिए हम अपने यहां अणु बम का निर्माण करें। यदि हमारे में शक्ति नहीं है, ताकत नहीं है तो हमारी सारी योजनाएं, हमारे सारे बड़े बड़े बांध किसी काम आने वाले नहीं है जब तक कि हम उनकी रक्षा करने में समर्थ नहीं हैं। हमारी यह योजनाएं किसी काम की नहीं जब कि हम उसकी रक्षा न कर पाएं, वे सब रह भी पाएंगी या नहीं ? तो ऐसी स्थिति में या तो हम अहिंसा के सिद्धांत पर पूरा विश्वास कर के उसको आगे बढ़ायें और अगर यह नहीं कर सकते, तो शक्ति का संग्रह करें, शक्ति के बिना भक्ति नहीं, चमत्कार के बिना कोई नमस्कार नहीं करता। ऐसी स्थिति में यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमको शक्ति को रखना चाहिये और अणु बम की शक्ति भी अपने पास रखें और इसका यह मतलब नहीं कि इसका दुरुपयोग किया जाय लेकिन अपने रक्षण के लिए यह आवश्यक है।

अनाज की खरीद के बारे में मैंने बताया ही। अब कोरबा में, मध्य प्रदेश में, अल्मूनियम का प्लांट लगा रहे है, उसके

[श्री विमल कुमार मन्नालालजी चौरड़िया]

लिए धन्यवाद देने के साथ साथ यह भी कह देना चाहता हूं कि हमारी सरकार मध्य प्रदेश के जो प्राकृतिक साधन है उनका उपयोग लेने में बड़ी सुस्त है और इसका एक उदाहरण कोरबा है। यहां जो हंगरी की टीम आई थी उसने १९६१ के अगस्त में ही कहा था कि इसकी यहां संभावना है, यहां अल्मूनियम के लिए कच्चा माल मिल रहा है और यहां कारखाना खोलना चाहिये लेकिन दो साल दो माह तक हमारी सरकार नींद में सोती रही, फिर दूसरा दल १९६३ ई० के अक्टूबर मास में आया और उसके बाद अब निर्णय करती है कि यहां पर अल्मनियम का कारखाना खोलना चाहिये। बहुत खुशी की बात है मगर वहां जो प्राकृतिक साधन है उनको उपयोग में लेने में बड़ी सुस्ती है, जनता वहां की तैयार, आप खुद भी तैयार फिर भी यह जो सुस्ती आप रेडटेपिज्म की वजह से करते हैं उसको ठीक ढाक करेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा।

एक निवेदन और कर देना चाहता हूं। जैसे कि रांची में, वहां के लोगों में यह भावना थी कि बिहार के लोगों को नियुक्तियों में प्राथमिकता नहीं दी जाती, या जिस क्षेत्र में उद्योग लगाया जाता है वहां के लोगों को वहां पर नौकर नहीं रखा जाता, उससे वहां पर बहुत बड़ी गड़बड़ी हुई जिसको कि रिपोर्टर ने सैबोटाज की संज्ञा दी, तो ऐसी स्थिति में मैं यह प्रार्थना करूंगा कि मध्य प्रदेश में यह जो कारखाना खोलने जा रहे हैं उसमें कृपा करके उस क्षेत्र के बेकार लोगों को स्थान देकर, वहां की शक्ति को और वहां के इंजीनियर्स को उपयोग में ला कर के उसका काम करें। यही आप लोगों से प्रार्थना है।

श्री भगवत नारायण भार्गव (उत्तर प्रदेश) : अध्यक्ष महोदय, जो शिक्षा आयोग के लिए प्रावधान किया गया है उसका मैं स्वागत करता हूं परन्तु यह अवश्य कहना चाहता हूं कि अच्छा होता अगर इनके सदस्यों में कुछ सदस्य ऐसे होते जिन्होंने अपना जीवन ग्रामीण क्षेत्रों में बिताया है, जो ग्रामीणों से घुलमिल चुके हैं, जिनको ग्रामीण संस्कृति ग्रामों की आवश्यकताओं तथा वहां की परिस्थितियों का पूर्ण रूप से ज्ञान है। मैं ग्रामीण क्षेत्रों के ऊपर जोर इसलिए देता हूं कि असली भारत ग्रामों में ही रहता है, ८० परसेंट भारतीय ग्रामों में रहते हैं।

[THE DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.]

हमारे शहरों में तो कालेजों की, युनिवर्सिटियों की भरमार हो रही है, एक एक शहर में दो दो या तीन तीन युनिवर्सिटियां खुल जाती हैं, एक एक शहर में पांच पांच या सात सात कालेज खुल जाते हैं परन्तु देहात के ऊपर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। तो शिक्षा आयोग को इसके ऊपर ध्यान देना चाहिए कि जिस देश की जनता ग्रामों में रहती है वहां के लिए हमें क्या करना चाहिए। केवल साक्षरता से ही काम नहीं चल सकता कि हमने उनको प्राइमरी क्लास में थोड़ी सी कुछ शिक्षा दे दी, तो शिक्षा हो गई, साक्षरता दूसरी चीज है और शिक्षा दूसरी चीज है। हमें ग्रामवासियों को शिक्षित बनाना है, उनको उच्च कोटि की शिक्षा देना है, देहातों में हमको विश्वविद्यालय खोलना है, देहातों में हमको कालेजों को खोलना है। इस बात के ऊपर शिक्षा आयोग को अवश्य ध्यान देना चाहिये।

इस समय जो एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जिस पर मैं सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं वह है शिक्षा की मंहगाई। आज कल हम गल्ले वगैरह की मंहगाई तो सुनते हैं परन्तु वास्तव में इस देश में शिक्षा बहुत मंहगी है। जो धनवान लोग हैं वे अपने बच्चों को ऊंची शिक्षा दिला सकते हैं, अपने रुपये के जोर से उत्तम से उत्तम शिक्षा अपने बच्चों को दे सकते हैं परन्तु जो गरीब आदमी हैं, या जो मध्यवर्गीय लोग हैं, वे अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने में असमर्थ

रहते हैं क्योंकि उच्च शिक्षा का खर्च इतना अधिक बढ़ा हुआ है कि थोड़ी आमदनी वाले उसका लाभ उठा ही नहीं सकते हैं। आप कहीं किसी पब्लिक स्कूल में चले जाइये, कान्वेन्ट स्कूल में चले जाइये, जिस पब्लिक स्कूल के खोलने की मांग इस सदन में हुई हैं, तो आपको मालूम होगा कि अगर आपको पहले दरजे में अपने बच्चे को भर्ती करना है, तो डेढ़ सौ रुपया उसी वक्त जमा करा लेंगे। एक बच्चे के लिये डेढ़ सौ रु० लगता है, फिर माहवारी फीस ५०, ६० रु० लगती है। इसके अतिरिक्त, अगर बाहर के लोग भर्ती होने आएं तो बोर्डिंग हाऊस में रहने के २०० रु० हैं। इस तरह आज आप सोचिए कि कोई गरीब या मध्यम वर्गीय आदमी चाहता है कि अच्छे स्कूल में, अच्छी संस्था में मेरे बच्चे को प्रवेश मिले, तो वह कैसे समर्थ हो सकता है! इस वास्ते शिक्षा आयोग को कोई ऐसा उपाय निकालना चाहिए कि जिससे उत्तम से उत्तम शिक्षा, ऊंचो से ऊंची शिक्षा गरीब आदमियों के बच्चों के लिये सुलभ हो सके।

यह शिक्षा का विशाल वृक्ष असल में बिल्कुल थोथा, खोखला, समझना चाहिये—वह टिक नहीं सकता—जब तक सारे भारतवर्ष के ग्रामों में शिक्षा का प्रसार नहीं होता।

दूसरी बात मैं यह कहूंगा कि जो प्राथमिक शिक्षा है वह सारे शिक्षा की बिल्कुल जड़ है, वह मूल है। अगर प्राथमिक शिक्षा के ऊपर ध्यान नहीं दिया जाता है, तो जो उच्च शिक्षा है वह किसी तरह से कायम नहीं रह सकती न वह पनप सकती है। प्राथमिक शिक्षा का यह हाल है कि जो अध्यापक और अध्यापिकाएं पढ़ाने के लिये रखी जाती हैं उनकी योग्यता बहुत कम होती है क्योंकि उनको वेतन बहुत कम मिलता है। जैसा वेतन मिलता है वैसे ही उन स्कूलों में अध्यापक और अध्यापिकाएं रहती हैं। प्राथमिक कक्षाओं के लिये जो शिक्षक हैं उनको कोई ट्रेनिंग बाल विज्ञान की नहीं दी जाती। वे नहीं जानते बालक की क्या प्रकृति है, स्वभाव है, बालक का हम किस प्रकार से सुधार कर सकते हैं। यहां तक देखने में आता है कि अध्यापक बल्कि कोमलांगी अध्यापिकाएं भी बच्चों को बेतों से मारती हैं। वे सुधार का एक ही उपाय जानते हैं कि अगर बच्चा कोई गलती करता है, जिद करता है, लड़ता फिरता है, तो उस बच्चे को बेंत मारना चाहिये, चांटे मारने चाहिये, उसको धूप में खड़ा करना चाहिये—यही उपाय अध्यापक और अध्यापिकाएं जानती हैं। मैं यह बात कोई साधारण स्कूलों की नहीं कह रहा हूं, बहुत से पब्लिक स्कूलों का यह हाल है जहां छोटे बच्चों को प्रेम से पढ़ाने की व्यवस्था की गई है और वहां पर प्रेम का प्रदर्शन बेतों और पटरियों की मार से किया जाता है। आप सोचें, कोई बच्चा अगर भूल से गलती कर गया और दो और दो पांच कह गया, तो बुद्धिमान अध्यापक समझता है यह कैसा बेवकूफ लड़का है, मैं तो इसे समझाता हूं दो और दो चार होता है। वह चाहता है जैसी बुद्धि मुझ में है वैसी बुद्धि लड़के में हो। अगर वैसी बुद्धि लड़के में नहीं है, तो बच्चे पर चांटे की मार पड़ गई या बेत मार दिया। उससे बच्चे के हृदय में कायरता उत्पन्न होती है, भय उत्पन्न होता है, वह झूठ बोलने लगता है। अगर घर में करने के लिये काम दिया और करके नहीं लाया, तो झूठा बहाना करने लगता है क्योंकि वह जानता है अगर सच बात मुंह से निकलती है, तो मार पड़ेगी। इस तरह की सजा को शिक्षा संस्थाओं से कानून के द्वारा बिल्कुल निकाल देना चाहिये।

फिर प्राथमिक शिक्षा का जो गणात्मक रूप है उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया जाता। छोटे छोटे बच्चों का जो पाठयक्रम है उसमें उनको छः छः, सात सात विषय पढ़ने पड़ते हैं। मैंने उनके विषयों को देखा है—पूरा एक बस्ता भर जाता है। तीसरी चीज यह है कि पांच घंटे वे स्कूलों में पढ़ें और चार घंटे वे घर में आकर काम करें, यह व्यवस्था बड़ी अन्यायपूर्ण है, यह व्यवस्था मिटा देनी चाहिये। बच्चों का शिक्षण ऐसा होना चाहिये कि

[श्री भगवत नारायण भार्गव]

पाठशाला में जो पढ़ाई हो वही पढ़ाई समझी जाय और वहीं बच्चा जो शिक्षा प्राप्त कर सके करे । हां, बड़े क्लासों में घर में करने के लिये पढ़ाई का काम दिया जाय । तो प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक रूप के ऊपर ध्यान देना चाहिए और बाल मनोविज्ञान की शिक्षा अध्यापकों और अध्यापिकाओं को मिलनी चाहिये ।

तीसरी बात यह है कि शिक्षा आयोग के सामने एक बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न यह होगा कि यूनिवर्सिटियों में शिक्षा का माध्यम क्या हो । मैं कहता हूं, आजकल तो उच्च कक्षाओं में अंग्रेजी के गुण गाए जा रहे हैं और हिन्दी की हीनता की दुंदुभि बजाई जा रही है--तब हम क्या आशा करें कि शिक्षा आयोग जिसमें अंग्रेजी के उत्कट प्रेमी भरे हुए हैं वे क्या एक क्षण यह सोचने को तैयार होंगे कि हिन्दी के द्वारा और क्षेत्रीय भाषाओं के द्वारा यूनिवर्सिटियों में शिक्षा दी जा सकती है । एक बात सोचने की है कि जब हिन्दी में और क्षेत्रीय भाषाओं में इन्टरमीडिएट तक सब विषयों में शिक्षा दी जाती है तब फिर कैसे आशा की जाय कि जिसने हिन्दी भाषा में शिक्षण पाया है वह बी० ए० या बी० एस० सी० एकदम अंग्रेजी में कैसे समझने लगेगा, वह तो और कमजोर होता जायेगा, जब कि यह कहा जाता है कि हम शिक्षा का स्तर ऊंचा करना चाहते हैं । इस तरह से शिक्षा का स्तर ऊंचा नहीं होगा क्योंकि जिस भाषा में वह शुरु से सीखता आया है उसमें उसको शिक्षण नहीं मिलेगा ।

आज के समाचारपत्र में निकला है कि गवर्नमेंट आफ इंडिया ने तय किया है कि आगे जो आल इंडिया सरविस की परीक्षाएं होंगी उनमें हिन्दी में उत्तर देने का लाभ दिया जायेगा । जब गवर्नमेंट आफ इंडिया की नीति यह है कि आल इंडिया सरविस में वह हिन्दी में उत्तर देने की सुविधा देना चाहती है तो फिर विश्वविद्यालयों में हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण देने में उनको क्या एतराज होना चाहिए क्योंकि वह बात एक दूसरे के विरुद्ध पड़ती है । इधर एक तरफ आप कहते हैं आई० ए० एस० में हिन्दी में उत्तर दे सकेंगे और दूसरी तरफ आप कहें कि बी० ए० में, एम० ए० में अंग्रेजी में उत्तर दें तो यह एक ऐसी बात नहीं है जो एक दूसरे के विरुद्ध है । तो एक नीति सरकार को निर्धारित करनी चाहिये--या तो पहले दरजे से ले कर एम० ए० तक सभी शिक्षण अंग्रेजी में दिया जाय, हर एक विषय अंग्रेजी में पढ़ाया जाय, हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा का बहिष्कार कर दिया जाय, या तो यही हो, नहीं तो विश्वविद्यालय तक सारा शिक्षण क्षेत्रीय भाषा या हिन्दी के द्वारा दिया जाय ।

شری عبدالغنی (پنجاب) : میڈم ڈپٹی چیرمین - هم ایک ارب سے زیادہ روپیہ منظور کرنے جا رہے ھیں - وہ تو خیر منظور کیا ہی جائے گا - مجھے اس میں دو تین باتیں عرض کرنی ھیں - ایک تو سو کروڑ روپیہ هم فوڈ کارپوریشن کے لئے منظور کر رہے ھیں - میں نے جیسا کہ پہلے عرض کیا تھا ٹھیک ھے اگر سولہ لاکھ ٹن کے قریب هم غلہ اس سے خرید پائیں گے - اور اس کو هم جنتا کے اطمینان کے لئے خرچ کریں گے تو اس میں میرا سجھاؤ گورنمنٹ کے لئے یہ ھے کہ بڑی خوشی سے کیجئے لیکن یہ جو سولہ لاکھ ٹن آیا ور - و تقریباً سولہ لاکھ ٹن کے قریب آج هم باھر سے منگوانے پر مجبور ھوئے ھیں اس کو اسی کارپوریشن کے

نیچے کر دیجئے اور اسی لاکھ ٹن کے قریب جو یہ ہوگا اس کو آپ بجائے اس کے کہ ریپبلیکن پارٹی اور غریب والنٹیرس کو اپنی لاٹھیوں کا شکار بنائیں بجائے اس کے کہ ان کو بری بری طرح سے جیلوں میں ڈالا جائے صرف اس لئے کیوں کہ وہ کہتے ہیں ہم آپ کے ویسٹ لینڈ کو آباد کریں گے - ہم غلہ پیدا کریں گے - ہم سرکار کے ہاتھ مضبوط کریں گے ان کے ہی سپرد یہ کام چھوٹے پیمانے پر کیا جائے کہ چالیس ٹن بھی . .

श्री गिरिराज किशोर कपूर (मध्य प्रदेश) : क्या इस हाउस में इस वक्त कोरम है ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: There is quorum.

श्री गिरिराज किशोर कपूर : कितने सदस्यों का कोरम होता है ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: 24 is the quorum.

شری عبدالغنی : تو میں یہ عرض کر رہا تھا کہ بجائے اس کے کہ آپ ان کو جیلوں میں ڈالیں یہ تقسیم کا کام آپ ان کے سپرد کریں - تقریباً پانچ کروڑ آدمیوں بہن بھائیوں کو وہ اناج دیا جا سکے گا سال بھر کے لئے اور اس سے تقریباً ۱۰ لاکھ ہریجن یا پس ماندہ جاتیاں اپنا پیٹ پال سکیں گے - اس کے علاوہ جیسے آپ ممبر آف پارلیمنٹ گھروں میں دودھ منگواتے ہیں اسی طرح ۱۰ لاکھ اور گرے ہوئے بھائی آباد ہو سکیں گے

اس لئے میرا سجھاؤ یہ ہے - میں نے سبرامنیم صاحب کو ایک چیتاونی دی تھی کہ کورپوریشن کی بڑی چرچا ہے اس لئے کورپوریشن کو کرپشن سے بچایا جائے - اس میں وہ کرپشن کو روکنے کے لئے روک لگائیں اور کچھ لوگوں کو چاہے وہ کانگریس پارٹی سے ہی پلاننگ کیوں نہ کرتے ہوں چاہے اپوزیشن سے بھی پلاننگ کیوں نہ کرتے ہوں ان کو ڈائرکٹر رکھیں جس سے ان کی نگرانی ہو سکے - ایسا نہ ہو کہ آج جس طرح سے سرکار شش و پنج میں پڑ گئی ہے باوجود اس کے کہ اپوزیشن کے سب سے ذمہ دار نیتاؤں نے جس میں کانگریس کے پچھلے پردھان پچھلے راشٹرپتی اچاریہ کرپلانی ہیں جس میں دیا بھائی جی ہیں جس میں باجپئی جی ہیں - جس میں اے - ڈی - منی جی ہیں جس میں کپور جی ہیں ان سب نے مل کر تمام پارٹیوں کے ... نے - کوئی پارٹی ایسی نہیں تھی کہ جس کے نیتا نہ ہوں سوائے کمیونسٹ پارٹی کے سب نے مل کر یہ کہا کہ اڑیسہ کے چیف منسٹر اور بیجو پٹنائک جو کہ پچھلے منسٹر رہ چکے ہیں وہ کرپٹ ہیں پھر بھی سرکار ابھی تک شش و پنج میں پڑی ہوئی ہے - اگر یہ بات غلط ہے تو سرکار اپوزیشن کے لیڈروں پر مقدمہ چلا سکتی ہے - اسی طرح سے لوگوں

[شری عبدالغنی]

کو بھروسہ دلانا ہے - ان کے لئے روٹی کے لئے اور اناج کے لئے کہ سب کو مل پائے گا لیکن صبر کی ضرورت ہے لیکن ہماری سرکار اتنی نکمی ہو گئی ہے اتنی کمزور ہو گئی ہے کہ پرتاپ سنگھ کیروں جو کہ پہلے چیف منسٹر تھے پنجاب کے وہ لال بہادر شاستری اور نندا جی کے خلاف باتیں کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ یہ سست ہو گئی ہے اور مہنگائی دن بہ دن بڑھتی جا رہی ہے - وہ پنجاب سرکار کی جو موجودہ سرکار ہے اس پر بھی حملہ کرتا ہے کیوں کہ اس کو پتہ ہے کہ یہ کانگریس والے کچھ کرنے والے نہیں ہیں - اگر کانگریس والے یا کانگریس سرکار کچھ کرنے والی ہوتی تو میرے خلاف مقدمہ بنایا ہوتا - میں عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اس سرکار کو چاہئے اور بے شک وہ جتنا روپیہ منظور کرانا چاہے کرائے بغیر روپئے کے کچھ چلنے والا نہیں ہے - لیکن ایسے کرپٹ منسٹر جیسے بخشی غلام محمد [illegible] اور بیرندر مترا ہیں ان کے خلاف بھی کارروائی ضروری کی جانی چاہئے تاکہ لوگوں میں بھروسہ پیدا ہو سکے -

SHRI N. PATRA (Orissa): Is there any decision against them that they were corrupt? Then how is he referring to them as being corrupt? If the hon. Member is alleged that he is also corrupt, how will be relish it?

SHRI ABDUL GHANI: I do not give **way.** Tt te not a point of order.

اس لئے میں عرض کر رہا تھا کہ لوگوں میں بھروسہ دلایا جائے کہ آپ جو کورپوریشن بنانے جا رہے ہیں اور اس پر جو اتنا روپیہ خرچ کرنے جا رہے ہیں اس کا صحیح طور پر استعمال ہوگا - آج آپ ایک ایجنسی کھول رہے ہیں اور اگلے دن آپ اس طرح کی کورپوریشن کھولتے جائیں گے - کل آپ جوتوں کا کورپوریشن کھولیں گے - کپڑے کا کھولیں گے چینی کا کھولیں گے سیمنٹ لوہے اور کھاد کا کھولیں گے - آپ اس طرح کی کون کونسی کورپوریشن بنانے جا رہے ہیں - اگر آپ اس طرح کی کورپوریشن بنانے جا رہے ہیں تو دیش کو وشواش دلائیے دیش کو بھروسہ دلائیے کہ ان کورپوریشنوں میں کرپشن نہیں ہوگا - اگر کرپشن بڑے پیمانے پر ہوگا تو یقیناً دیش والے اس بات کو کہنے میں حق بجانب ہونگے کہ سمرا [illegible] جو نیک نیت تھا آنسٹ تھا اور ہارڈ ورکنگ تھا - پھر کیا بات ہے کہ اس کے ہوتے ہوئے کارپوریشن میں اس طرح کا کرپشن ہو رہا ہے - اس لئے میں ان سے عرض کرنا چاہتا ہوں کہ وہ اس بات کا خیال رکھیں کہ اس کارپوریشن میں کسی طرح کی کرپشن کی بات نہ آنے پاوے -

دوسری بات میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اس کارپوریشن بل میں ایجوکیشن کے متعلق روپیہ منظور

اب میں ایٹمک شکتی کے بارے میں کچھ عرض کرنا چاہتا ہوں - اس کے بارے میں کہا گیا ہے کہ ہم اچھے تعمیری کاموں کے لئے اس کا استعمال کریںگے اور اس کے لئے روپیہ منظور کروانے کے لئے کہا گیا ہے جس سے مجھے بڑی خوشی ہوتی ہے - یہ صحیح بات ہے لیکن میں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں -

دو رنگی چھوڑ دے یک رنگ ہو جا
سراسر موم ہو یا سنگ ہو جا

اگر کرنا ہے تو تھوڑا تھوڑا کرکے کرتے رہئے - یہ ٹھیک ہے کہ ہم کسی پر حملہ نہیں کریںگے - یہ میں مانتا ہوں کہ اگر ہم پر کوئی حملہ کرے گا تو ہم ہاتھ جوڑ کر کھڑے نہیں ہو جائیں گے - نہ یہ لال بہادر کے بس میں ہے اور نہ ڈیفنس منسٹر شری چوہان کے بس میں ہے - میں اب بھی لڑائی کا خطرہ مانتا ہوں کیوں کہ چین جو ہندی چینی بھائی بھائی کہتا تھا وہ قصائی نکلا - میں کھلے طور پر یہ کہنا چاہتا ہوں کہ سرکار کو اپنی پالیسی پر پھر سے سوچنا چاہئے - ہم کسی پر حملہ کرنے کے لئے ایٹم بم تیار کرنا نہیں چاہتے ہیں لیکن چین جس نے ایٹم بم تیار کر لیا ہے اور ہم پر کبھی بھی حملہ کر سکتا ہے تو اس لئے ہمیں بھی اپنا ایٹم بم تیار رکھنا چاہئے - میں گاندھی وادی ہوکر بھی یہ بات کہتا ہوں - کیوں کہ گاندھی بابا نے

کروانے کے بارے میں کہا گیا ہے - اس کے بارے میں مجھے خوشی ہوتی ہے- لیکن اس میں مجھے صرف ایک بات کہنی ہے اور وہ یہ ہے کہ جیسا کہ میں نے پہلے کہا تھا - کہ اردو ایک زمانہ تک سارے دیش میں ہندی کے بعد سب سے پاپولر زبان رہی ہے - خاص طور پر ناولز میں اور ساؤتھ میں اس کے اخبار نکلتے ہیں اور اس زبان میں طرح طرح کے مشاعرے ہوتے ہیں - میں چاہتا ہوں کہ ایجوکیشن منسٹر تمام اسکولوں میں تو وہ نہ کر پائیں گے لیکن وہ کوئی ایک الگ پاور رکھیں جس میں کہ بچے اپنی زبان میں یعنی اردو میں اگر وہ پڑھنا چاہیں تو تعلیم حاصل کر سکیں - اس کے ساتھ ہی ساتھ جو ہمارا تاریخ کا خزانہ ہے اتہاس ہے دیوناگری کے جو کاغذات ہیں وہ سب اردو میں ہیں اور ٹوڈر مل کے زمانہ سے لے کر آج تک وہ اردو میں رکھے ہوئے ہیں ان کو ضائع ہونے سے بچایا جائے - غالب، مومن، ذوق، انیس، دبیر، آزاد، سرشار، نسیم ان کے کلام اور اچھے اچھے اشعار جو ہیں وہ سننے نہ پائیں کیوں کہ یہ سب چیزیں اردو میں لکھی گئی ہیں - اس لئے میں خاص توجہ دلانا چاہتا ہوں اگر ان چیزوں کو بچانے کا ان کا ارادہ ہے تو اس سے ہندوستان کی شان پر ایک دھبہ لگے گا -

[شری عبدالغنی]

کہا تھا کہ کایرتا اور بزدلی سے تشدد اچھا ہے ۔ یہ بات مجھے انہوں نے اس وقت کہی جب لوگ پاگل ہو گئے تھے - جب لوگ دیوانہ ہو کر ایک دوسرے کو مذہب کے نام پر قتل کرتے تھے - تو انہوں نے اس وقت کہا تھا کہ کائرتا سے تشدد اچھا ہے - اگر چین ہمارے ہندوستان کو ہمارے ہندوستان کے مارل کو ہماری سرکار کے مارل کو ہماری فوج کے مارل کو ایٹم بم سے ڈرانا چاہتا ہے تو میں کہتا ہوں کہ چاہے بڑی سے بڑی رقم کیوں نہ منظور کروانی پڑے ہمیں حوصلہ کر کے ایٹم بم بنانا چاہئے۔ اس لئے نہیں کہ تو اس کو کسی پر چلانا ہے بلکہ اگر کوئی ہم پر چلائے گا تو ہم دھم دھم نہیں کھائیں گے ۔ اور ہمارا دیش بھی تباہ نہ ہو -

بہر حال میں آپ کا شکریہ ادا کرتا ہوں کہ آپ نے مجھے بولنے کے لئے وقت دیا لیکن میں ایک بات کی طرف آپ کی توجہ دلانا چاہتا ہوں کہ ریپلیکن پارٹی کے آدمیوں کو لاٹھی چارج کیا جا رہا ہے اور ان کو جیلوں میں ڈالا جا رہا ہے اس کو آپ بند کیجئے - (*Time bell rings.*) ایک بات میں اور کہنا چاہتا ہوں اس میں مہر چند کھنہ کی منسٹری کے بارے میں کچھ روپیہ منظور کرنے کے لئے کہا گیا ہے - انگریزوں کے زمانہ میں بھی مہرچند کھنہ بڑی شان سے تھے - خان منسٹری اور مسلم لیگ میں بھی بڑی شان سے رہے اور اب کانگریس میں انہوں نے بڑا کام کیا ہے -

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां) : काबिल तो हर वक्त काबिल रहता है ।

شری عبدالغنی : انہوں نے یہ کام کیا بخشی غلام محمد اور ان کے بھائی جو کہ بڑے غریب تھے ان کو بسانے کے لئے یہاں ڈیفنس کالونی اور دوسری کالونی میں جہاں سو اور دو سو روپئے گز زمین ملتی تھی انہوں نے تین روپئے گز زمین منظور کروائی اس طرح سے بچاروں نے بڑا کام کیا اس کے ساتھ ہی ساتھ انہوں نے کانگریس والوں کو پلاٹ دلوائے جن سے لاکھوں روپیہ کرائے کا آتا ہے - انہوں نے کانگریس کے لوگوں کو آباد کرنے کے لئے - دیہی فارم کھولنے کے لئے بڑی بڑی کوآپریٹیو فارمس کھولنے کے لئے بڑی بڑی زمینیں دیں - لیکن وہاں پر یہ چیزیں تو نہیں ہیں بلکہ وہاں پر بڑی بڑی بلڈنگیں بن گئی ہیں - دوکانیں بن گئی ہیں - ان سے لاکھوں روپیئے کا کرایہ لیا جا رہا ہے - یہ بےچارے

بڑے شریف اور اچھے منسٹر ہیں - اور ہمارے شاہنواز کہتے ہیں کہ وہ بڑے اچھے اور قابل ہیں - ویسے ہمارے کیور صاحب بھی اس کے بارے میں کافی کہہ چکے ہیں - اسی طرح کے ہمارے کانگریس کے اور بڑے بڑے نیتا ہیں -(*Time bell rings.*) اور اسی قابلیت کی وجہ سے لوگ کانگریس کے بڑے بڑے نیتا بن جاتے ہیں -

श्री शाहनवाज खां : खुदा करे उनकी भी बारी आये ।

شری عبدالغنی : یہ تو قسمت کی بات ہے - اور جو زیادہ خوشامد کرتا ہے وہ پردھان منتری اور سب کچھ ہو جاتا ہے اس میں عقل کی کیا بات ہے -

श्री अब्दुल गनी (पंजाब) : मडम डिप्टी चेयरमैन, हम एक अरब से ज्यादा रुपया मंजूर करने जा रहे हैं । वह तो खैर मंजूर किया ही जायेगा । मुझे इस में दो तीन बातें अर्ज करनी हैं । एक तो सौ करोड़ रुपया हम फूड कारपोरेशन के लिये मंजूर कर रहे हैं : मैं ने जैसा कि पहले अर्ज किया था ठीक है अगर सोला लाख टन के करीब हम गल्ला इससे खरीद पायेंगे और इस को हम जनता के इत्मीनान के लिये खर्च करेंगे तो इसमें मेरा सुझाव गवर्नमेंट के लिये यह है कि बड़ी खुशी से कीजिये लेकिन यह जो सोलह लाख टन आया और जो तकरीबन सोलह लाख टन के करीब आज हम बाहर से मंगवाने पर मजबूर हुए हैं इस को इसी कारपोरेशन के नीचे कर दीजिये और अस्सी लाख टन के करीब जो यह होगा इस को आप बजाए इस के कि रिपब्लिकन पार्टी और गरीब वालंटियस को अपनी लाठियों का शिकार बनायें बजाए इस के कि इन को बड़ी बुरी तरह से जेलों में डाला जाये । सिर्फ इसलिये क्योंकि वे कहते हैं हम आप के वैस्ट लैंड को आबाद करेंगे । हम गल्ला पैदा करेंगे हम सरकार के हाथ मजबूत करेंगे इन के ही सुपुर्द यह काम छोटे पैमाने पर किया जाये कि चालीस टन भी . . . .

श्री गिरिराज किशोर कपूर (मध्य प्रदेश) : क्या इस हाउस में इस वक्त कोरम है ?

THE DEPUTY CHAIRMAN: There is quorum.

श्री गिरिराज किशोर कपूर : कितने सदस्यों का कोरम होता है ?

THE DEPUTY CHAIRMAN: 24 is the quorum.

श्री अब्दुल गनी : तो मैं यह अर्ज कर रहा था कि बजाए इस के कि आप इन को जेलों में डालें यह तकसीम का काम आप इन के सुपुर्द करें । तकरीबन पांच करोड़ आदमियों बहन भाइयों को वह अनाज दिया जा सकेगा, साल भर के लिए और इस से तकरीबन १० लाख हरिजन या पसमान्दा जातियां अपना पेट पाल सकेंगी । इस के अलावा जैसे आप मैम्बर आफ पार्लियामेंट घरों में दूध मंगवाते हैं इसी तरह १० लाख और गिरे हुए भाई आबाद हो सकेंगे इसलिये मेरा सुझाव यह है । मैं ने सुब्रह्मण्यम साहब को एक चेतावनी दी थी कि कारपोरेशन की बड़ी चर्चा है इसलिये कारपोरेशन को करप्शन से बचाया जाये । इसमें वह करप्शन को रोकने के लिये रोक लगायें और कुछ लोगों को चाहे वे कांग्रेस पार्टी से ही बिलोंग क्यों न करते हों चाहे अपोजीशन से भी बिलोंग क्यों न करते हों इन को डायरेक्टर रखें जिस से इन की निगरानी हो सके । ऐसा न हो कि

†[ ] Hindi transliteration.

[श्री अब्दुल ग़नी]

आज जिस तरह से सरकार शशोपंज में पड़ गई है बावजूद इस के कि अपोजीशन के सब जिम्मेदार नेताओं ने जिस में कांग्रेस के पिछले प्रधान, पिछले राष्ट्रपति, आचार्य कृपलानी हैं जिस में डाह्या भाई जी हैं जिस में बाजपेयी जी हैं, जिस में ए० डी० मणि जी हैं, जिस में कपूर जी है इन सब ने मिल कर तमाम पार्टियों के नेताओं ने कोई पार्टी ऐसी नहीं थी कि जिस के नेता न हों सिवाये कम्युनिस्ट पार्टी के सब ने मिल कर यह कहा कि उड़ीसा के चीफ मिनिस्टर और बीजू पटनायक जो कि पिछले मिनिस्टर रह चुके हैं वह करप्ट हैं फिर भी सरकार अभी तक शशोपंज में पड़ी हुई है। अगर यह बात गलत है तो सरकार अपोजीशन के लीडरों पर मुकदमा चला सकती है। इसी तरह से लोगों को भरोसा दिलाना है। अन्न के लिये, रोटी के लिये, और अनाज के लिये कि सब को मिल पायेगा लेकिन सबर की जरूरत है। लेकिन हमारी सरकार इतनी निकम्मी हो गई है, इतनी कमजोर हो गई है कि प्रताप सिंह कैरों जो कि पहले चीफ मिनिस्टर थे पंजाब के, वह लाल बहादुर शास्त्री और नन्दा जी के खिलाफ बातें करते हैं और कहते हैं कि यह सुस्त हो गई है और महंगाई दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। वह पंजाब सरकार की जो मौजूदा सरकार है इस पर भी हमला करता है क्योंकि इस को पता है कि यह कांग्रेस वाले कुछ करने वाले नहीं हैं। अगर कांग्रेस वाले या कांग्रेस सरकार कुछ करने वाली होती तो मेरे खिलाफ मुकद्दमा बनाया होता। मैं अर्ज करना चाहता हूं कि इस सरकार को चाहिए और बेशक वह जितना रुपया मंजूर चाहे कराये। बगैर रुपये के कुछ चलने वाला नहीं है। लेकिन ऐसे करप्ट मिनिस्टर जैसे बीजू पटनायक और बिरेन्द्र मित्रा हैं इन के खिलाफ भी कार्यवाही जरूरी की जानी चाहिए ताकि लोगों में भरोसा पैदा हो सके।

SHRI N. PATRA (Orissa): Is there any decision against them that they were corrupt? Then how is he references to them as being corrupt? If the hon. Member is alleged that he is also corrupt, how will be relish it?

SHRI ABDUL GHANI: I do not give way. It is not a point of order.

इसलिये मैं अर्ज कर रहा था कि लोगों में भरोसा दिलाया जाये कि आप जो कारपोरेशन बनाने जा रहे हैं और इस पर जो इतना रुपया खर्च करने जा रहे हैं इस का सही तौर पर इस्तेमाल होगा। आज आप एक ऐजेंसी खोल रहे हैं और आये दिन आप इस तरह की कारपोरेशन खोलते जायेंगे कल आप जूतों का कारपोरेशन खोलेंगे, कपड़े का खोलेंगे चीनी का खोलेंगे सीमेंट लोहे और खाद का खोलेंगे। आप इस तरह की कौन कौन सी कारपोरेशन बनाने जा रहे हैं। अगर आप इस तरह की कारपोरेशन बनाने जा रहे हैं तो देश को विश्वास दिलाइये, देश को भरोसा दिलाइये कि इन कारपोरेशनों में करप्शन नहीं होगा। अगर करप्शन बड़े पैमाने पर होगा तो यकीनन देश वाले इस बात को कहने में हक बजानब होंगे कि सुब्रह्मण्यम जो नेक नीयत था, आनेस्ट था और हार्ड वर्किंग था फिर क्या बात है कि इस के होते हुए कारपोरेशन में इस तरह का करप्शन हो रहा है ? इसलिये मैं इन से अर्ज करना चाहता हूं कि वह इस बात का ख्याल रखें कि इस कारपोरेशन में किसी तरह की करप्शन की बात न आने पावे।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि इस कारपोरेशन बिल में एजूकेशन के मुतल्लक रुपया मंजूर करवाने के बारे में कहा गया है। इस के बारे में मुझे खुशी होती है लेकिन इसमें मुझे सिर्फ एक बात कहनी है और वह यह है कि जैसा कि मैंने पहले कहा था कि उर्दू एक जमाने तक सारे देश में हिन्दी के बाद सबसे पोपूलर जबान रही है। खासतौर पर नार्थ में और साउथ में इसके अखबार निकलते हैं और इस जबान में तरह तरह के मुशायरे होते हैं। मैं चाहता हूं

कि एजूकेशन मिनिस्टर साहब तमाम स्कूलों में तो वह न कर पायेंगे लेकिन वह कोई ऐसा अलग पावर रखें जिस में कि बच्चे अपनी जबान में यानी उर्दू में अगर वे पढ़ना चाहें तो तालीम हासिल कर सकें । इसके साथ ही साथ जो हमारा तारीख़ का ख़ज़ाना है इतिहास है, रेविनियू के जो कागजात हैं वे सब उर्दू में हैं । और टोडरमल के ज़माने से लेकर आज तक वह उर्दू में रखे हुए हैं । इनको जाया होने से बचाया जाये। ग़ालिब, मोमिन, ज़ोक, अनीस कैफी, आज़ाद सरशार, नसीम इन के कलाम और अच्छे अशहार जो हैं वे मिटने न पायें क्योंकि यह सब चीजें उर्दू में लिखी गई हैं। इसलिये मैं खास तवज्जो दिलाना चाहता हूं अगर इन चीजों को मिटाने का इन का इरादा है तो इससे हिन्दुस्तान की शान पर धब्बा लगेगा ।

अब मैं एटामिक शक्ति के बारे में कुछ अर्ज करना चाहता हूं। इसके बारे में कहा गया है कि हम अच्छे तामीरी कामों के लिये इसका इस्तेमाल करेंगे और इसके लिये रुपया मंजूर करवाने के लिये कहा गया है जिससे मुझे बड़ी खुशी हुई है । यह सही बात है लेकिन मैं यह अर्ज करना चाहता हूं ।

दो रंगी छोड़ दे यक रंग हो जा ।
सरासर मोम हो या संग हो जा ।।

अगर करना है तो थोड़ा थोड़ा करके करते रहिये । यह ठीक है कि हम किसी पर हमला नहीं करेंगे । यह मैं मानता हूं कि अगर हम पर कोई हमला करेगा तो हम हाथ जोड़ कर खड़े नहीं हो जायेंगे । न यह लाल बहादुर शास्त्री के बस में है और न डिफेंस मिनिस्टर श्री चह्वान के बस में है । मैं अब भी लड़ाई का खतरा मानता हूं क्योंकि चीन जो हिन्दी चीनी भाई भाई कहता था वह कसाई निकला । मैं खुले तौर पर यह कहना चाहता हूं कि सरकार को अपनी पालिसी पर फिर से सोचना चाहिए। हम किसी पर हमला करने के लिये एटम बम तैयार करना नहीं चाहते हैं लेकिन चीन जिस ने एटम बम तैयार कर लिया है और हम पर कभी भी हमला कर सकता है तो इसलिए हमें भी अपना एटम बम तैयार रखना चाहिए । मैं गांधी वादी हो कर भी यह बात कहता हूं । क्योंकि गांधी बाबा ने कहा था कि कायरता और बजदिली से तशद्दुद अच्छा है । यह बात मुझे उन्होंने उस वक्त कहीं जब लोग पागल हो गये थे । जब लोग दिवाना होकर एक दूसरे को मज़हब के नाम पर कतल करते थे । तो उन्होंने उस वक्त कहा था कि कायरता से तशद्दद अच्छा है । अगर चीन हमारे हिन्दुस्तान को हमारे हिन्दुस्तान के मारल को, हमारी सरकार के मारल को, हमारी फौज के मारल को एटमबम से डराना चाहता है तो मैं कहता हूं कि चाहे बड़ी से बड़ी रकम क्यों न मंजूर करवानी पड़े हमें हौसला करके एटमबम बनाना चाहिए इसलिए नहीं कि हम को इसको किसी पर चलाना है बल्कि अगर कोई हम पर चलायेगा तो हम रहम नहीं खायेंगे । और हमारा देश भी तबाह न हो ।

बहरहाल में आप का शुक्रिया अदा करता हूं कि आप ने मुझे बोलने के लिये वक्त दिया लेकिन मैं एक बात की तरफ आप की तवज्जो दिलाना चाहता हूं कि रिपब्लिकन पार्टी के आदमियों को लाठी चार्ज किया जा रहा है और उनको जेलों में डाला जा रहा है इसको आप बन्द कीजिए । (*Time bell rings.*) एक बात मैं और कहना चाहता हूं इसमें मेहर चन्द खन्ना की मनिस्ट्री के बारे में कुछ रुपया मंजूर करने के लिये कहा गया है । अंग्रेजों के ज़माने में भी मेहर चन्द खन्ना बड़ी शान से थे । खान मिनिस्ट्री और मुसलिम लीग में भी बड़ी शान से रहे और अब कांग्रेस में उन्होंने बड़ा काम किया है ।

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज़ खां) : काबिल तो हर वक्त काबिल रहता है ।

श्री अब्दुल गनी : उन्होंने यह काम किया बख्शी गुलाम मोहम्मद और उनके भाई जो कि बड़े गरीब थे उनको बसाने के लिये

[श्री अब्दुल गनी]

यह डिफेंस कालोनी और दूसरी कालोनी में जहां सौ और दो सौ रुपये गज जमीन मिलती थी उन्होंने तीन रुपये गज जमीन मंजूर करवाई इस तरह से बेचारों ने बड़ा काम किया इसके साथ ही साथ उन्होंने कांग्रेस वालों को प्लाट दिलवाये जिससे लाखों रुपये किराये का आता है। उन्होंने कांग्रेस के लोगों को आबाद करने के लिये डेरी फार्म खोलने के लिये बड़ी बड़ी को-आपरेटिव फार्मस खोलने के लिये बड़ी बड़ी जमीनें दीं। लेकिन वहां पर यह चीजें तो नहीं हैं बल्कि वहां पर बड़ी बड़ी बिल्डिंगें बन गई हैं। दुकानें बन गई हैं जिन से लाखों रुपये का किराया लिया जा रहा है। ये बेचारे बड़े शरीफ और अच्छे मिनिस्टर हैं और हमारे शाहनवाज कहते हैं कि वह बड़े अच्छे और काबिल हैं, वैसे हमारे कपूर साहब भी उनके बारे में काफी कह चुके हैं। इसी तरह के हमारे कांग्रेस के और बड़े बड़े नेता हैं। (*Time bell rings.*) और इसी काबलियत की वजह से लोग कांग्रेस के बड़े बड़े नेता बन जाते हैं।

श्री शाहनवाज खां : खुदा करे उनकी भी बारी आये।

श्री अब्दुल गनी : यह तो किस्मत की बात है। और जो ज्यादा खुशामद करता है वह प्रधान मंत्री और सब कुछ हो जाता है इस में अक्ल की क्या बात है।]

श्री के० सी० बघेल (मध्य प्रदेश) : उपसभापति महोदया, मैं इस बिल का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। सब से पहले मैं इस बिल में अनाज के सम्बन्ध में जो १ अरब २ करोड़ रुपये की मांग की गई है, उसके सम्बन्ध में कहना चाहता हूं। इसमें कोई शक नहीं है कि हम अनाज संकट निवारण के मामले में असफल रहे हैं और हम लोगों को उनकी जरूरत के मुताबिक अनाज नहीं दे सके। लोगों के सामने अन्न के जहाज खड़े थे और लोग भूखों मर रहे थे, लेकिन हम अनाज उनके पेटों तक नहीं पहुंचा सके, यह एक बहुत ही दुख-भरी बात है। इस तरह से जहाजों को रोकना इस देश के लिए सबसे बड़ी दुर्भाग्य की बात है और लज्जा की बात है। इस तरह की बात दुबारा न हो, उसके लिए हमें काफी सावधानी बरतने की आवश्यकता है। यही मैं आप से प्रार्थना करना चाहता हूं। हमारे सामने फूड कारपोरेशन की योजना रखी गई है। यह एक आशा का संदेश है। बुझे दिलों में अंधकार जहां है, वहां प्रकाश, रोशनी और चिराग ले करके यह कारपोरेशन की बात लाई जा रही है। अब यह आगे देखा जायगा कि हम इसमें कहां तक सरसब्ज होते हैं और हम अपनी समस्याओं को सुलझाने में इस फूड कारपोरेशन के द्वारा कितनी सफलता प्राप्त करते हैं। मैं इस बात को अध्ययन करता हूं, तो मुझ को यह मालूम होता है कि सुब्रह्मण्यम् साहब जो कि आज इसके चार्ज में हैं, बहुत दिक्कतों के बाद भी अपनी इस अन्न की समस्या का मुकाबिला करने में और इस को हल करने में काफी असें से काबलियत के साथ लगे हुए हैं और इसमें मुझ को दो रायें नहीं मालूम पड़ती वे इसमें दिलाई दे रहे हैं, ऐसा मैं कभी नहीं कहूंगा।

उनके सामने जो दिक्कतें आती हैं उन दिक्कतों को अगर हम देखते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि अधिकारियों, व्यापारियों और सरकारी कर्मचारियों के द्वारा वे आती हैं, जिन को कि आगे चल कर उनको जरा कड़े हाथ से सम्हालना पड़ेगा। लेकिन इस के साथ साथ यह बात भी सही है कि देश में ऐसी एक फ़िजा पैदा हो गई है, राजनैतिक फ़िजा, जिसमें कि भिन्न भिन्न दलों के लोग भी सत्ता की राजनीति को जीवन में प्रधानता देने के कारण, ऐसे मौकों का कुछ फायदा उठाते हैं। मैं किसी

दल विशेष की बात नहीं कहता । इसमें सत्ताधारी दल के लोग भी कभी कभी शामिल हो जाते हैं । तो यह जो अन्न का मामला राष्ट्र का संकट है इसको एक राष्ट्रीय समस्या मानना चाहिए और दल गत राजनीति के लिए एक विषय बना कर के सत्ता हथियाने के लिए एक इसका इस्तेमाल नहीं होना चाहिये । यह सभी राजनीतिक दलों के लोगों के समझने की बात है क्योंकि अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारा देश बरबाद होगा और फिर कोई दल और कोई राजनीति नहीं चल सकेगी हम आगे आने वाले समय में स्वस्थ परम्परा हर दल में कायम करें और उसका नतीजा यह हो कि चाहे जिस दल के हाथ में शासन हो लेकिन ऐसी राष्ट्रीय संकट की समस्याओं के समय में हम उस सत्ताधारी दल का हाथ मजबूत करें । आज कांग्रेस के हाथ में शासन है कल मुमकिन है कि किसी दूसरे दल के हाथ में आ जाय । लेकिन स्वस्थ परम्परा यह कायम हो कि जिन लोगों के हाथ में शासन हो ऐसे राष्ट्रीय संकट के समय में एक दिल हो कर के, एक जान हो कर के और संगठित हो कर के हम सब शासन का हाथ मजबूत करें ।

श्री गिरिराज किशोर कपूर : हमें खुशी है कि आपको यकीन हो रहा है कि सत्ता दूसरे के हाथ में जायगी ।

श्री के० सी० बघेल : देखिये यह तो आदमी महज बेवकूफ होगा जो यह समझेगा कि :

"यावत चन्द्र दिवाकरौ"

एक ही आदमी की सत्ता रहेगी । कभी न रही है और न रहेगी । अगर वैसा मैं सोचूं तो मुझसे अधिक बेवकूफ कोई न होगा । इसलिये मैं इस बात को मानता हूं और दूरदृष्टि से मानता हूं हलकेपन से नहीं ।

श्री गिरिराज किशोर कपूर : धन्यवाद ।

श्री के० सी० बघेल : तो यह जब फुडग्रेन के पर्चेज का मामला आता है तो उसमें मुझे एक बात यहां कहने के लायक जो मालूम पड़ती है वह यह है कि जब इस मामले को मैं देखता हूं तो कृषकों के चेहरे मेरी नजर के सामने आ जाते हैं । कृषक का कृश शरीर जो है उसके पिचके हुए गाल और निचोड़े हुये चेहरे एक तरफ तो हम उसको देखते हैं और दूसरी तरफ हम यह कहते हैं कि ये अन्नदाता हैं हमारे देश की रीढ़ की हड्डी हैं और इन्हीं के भरोसे हमें सब अनाज मिलता है । हम केवल उसको अपनी स्वार्थ सिद्धि का साधन बनाये हुए हैं लेकिन हम उसकी ओर ध्यान नहीं देते हैं । यह सही है कि आज थोड़ा प्लानिंग और दूसरे मामलों में हमने थोड़ा उसकी तरफ ध्यान देना शुरू किया है । लेकिन फिर भी आलटोल्ड सब बातों को देख करके मैं कहूंगा कि अभी भी किसान बहुत उपेक्षित है उसकी तरफ दुर्लक्ष्य किया जा रहा है वह दुखी है और उसकी मनोदशा दिनों दिन भयंकर होती जा रही है ।

मैं छत्तीसगढ़ क्षेत्र से आया हुआ हूं जिसको राइस बाउल आफ इंडिया कहते हैं वहां आमतौर से किसानों के मुंह से यह आवाज निकलने लगी है : "छेरी बियाबय हुंडरा बर" यह एक छत्तीसगढ़ी कहावत है और इसका मतलब यह है : " A goat to beget fora wolf " इसका मतलब यह हुआ कि वे यह कह रहे हैं कि हम लोग तो मर मर कर के अनाज पैदा करें मशक्कत से सब चीजें पैदा करें और वे लोग जो शहरों में ऐश व आराम की जगह पर रह रहे हैं वे खायें सस्ते भाव से और हमारी जो जरूरत की चीजें हैं जैसे बैल है लोहा है और फर्टिलाइजर्स हैं ये सब आसमान छूने वाली कीमतों पर मिलें तो इस तरह से

(श्री के० सी० बघेल)

हम ज्यादा दिनों तक नहीं रह सकेंगे । आज किसान की क्या हालत है ? वह सबसिस्टेंस लेबिल पर रहता है । इकोनामिक लाज के मुताबिक चीजों की जो कीमतें निर्धारित करने की प्रणाली है उसके मुताबिक अगर आप देखें तो मैं ईमानदारी से यह कहता हूं कि आप अनाज की वास्तविक कीमत उसको नहीं दे रहे है । यह क्या बात है कि मेहनत मशक्कत करने वाला आदमी पूरा बदन पर कपड़ा न पहन सके अपने बाल बच्चों को स्कूल में न पढ़ा सके सर्दी गर्मी से बचने के लिये मकान न बना सके और कर्जों से रात दिन लदा रहे । ऐसी स्थिति हमारे देश के लिये बड़ी खतरनाक है बड़ी भयंकर है और हम लोगों के लिये जो अपने आपको देश सेवक और देशभक्त कहते हैं शर्म की बात है कि हम इसको जल्दी से जल्दी ठीक नहीं कर पा रहे हैं । हम रेमुनरेटिव प्राइस देने की बात करते हैं लेकिन अभी भी जो अनाज की कीमत बांधी गई है मैं आपसे छत्तीसगढ़ की हालत जानते हुए कहता हूं कि किसान को पूरी पूरी रेमुनरेटिव प्राइस नहीं मिलती है । समय बहुत कम है । इसलिये मैं डिटेल में नहीं जाऊंगा । अगर उसकी बोआई खेत के जोतने में अनाज में और खाने पीने में तमाम दुनिया भर का खर्चा वह करता है और औरत मर्द जिस तरह कमाते जाते है उस तरह उनकी मेहनत मजदूरी और मेहनताना अगर आप बांधें तो मैं कहता हूं कि उसे उचित मूल्य नहीं मिल रहा है । (Time bell rings) मैं दो तीन मिनट से ज्यादा समय नहीं लूंगा और बहुत जल्दी खत्म कर दूंगा ।

शुगर मिल्स के बारे में तो 2 करोड़ की विदेशी मुद्रा सब्सीडी के रूप में घाटा पूर्ति के रूप में आप उन विदेशी मुद्रा के कमाऊ पूतों को दे रहे है जो आपके लाडले हैं और उनका आप खयाल नहीं कर रहे हैं जो आपके इस पंचभौतिक स्वदेशी चोला को जिंदा रखते हैं । गन्ना पैदा करने वाले किसान की तरफ आप दुर्लक्ष्य कर रहे हैं अंडा देने वाली मुर्गी भूख रख कर अंडे बेचने वाले की रक्षा कर रहे हैं ।

एजूकेशन के मामले है यह जो आज एजूकेशन मिल रही है उसके बारे में बहुत से लोगों ने कहा है । मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि आज हमको जो शिक्षा मिल रही है वह केवल मेंटल शिक्षा ही मिल रही है । वास्तव में वह फिजिकल मारल और स्प्रिचुअल होनी चाहिये । केवल बाहर की बड़ी बड़ी डिग्रियां प्राप्त करने से कुछ नहीं होगा । चरित्र बल का मजबूत मनोबल का निर्माण करना होगा शिक्षा से ।

कोरबा के विषय में कुछ शब्द कहना चाहता हूं । मैडम एक दो मिनट में और ले लेता हूं ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Chairman requested that each Member should take only ten minutes

श्री के० सी० बघेल : कोरबा और कोयना पब्लिक सेक्टर के हाथ में जायेगा और मैं यह कहना चाहता हूं कि वहां जो जनरल मैनेजर रहें वे प्रॉविंश्यालिज्म वाले व्यू के न रहें नेशनल आइडियाज के आदमी रहें और वहां के जो लोकल आदमी हैं उनको नियुक्ति में प्रमुखता दें योग्य जो हों उनको प्रायरिटी दें और जो अयोग्य हों उनके प्रशिक्षण का इन्तजाम करें और अच्छे आदमी वहां पर रखे जायें ।

अटामिक एनर्जी के विषय में हमें विध्वंसक घातक और मारक बातों की तरफ न जा करके रचनात्मक बातों की तरफ जाना चाहिये और इस सम्बन्ध में ऐसे अनुसंधान होने चाहियें जिससे दुनिया में जगत गुरु भारत से आशा का प्रकाश मिल सके । कई भाइयों ने कहा कि हमारे पास अगर आटम बम नहीं रहेगा तो हमारे ऊपर हमला हो जायेगा । यह एक ऐसी जटिल समस्या

कि, जिसके ऊपर बहुत कुछ बोला जा सकता है, लेकिन उसके लिये समय नहीं है । इतना मैं अवश्य कहूंगा कि आज आटम बम बनाने की दौड़ में हम दूसरे देशों से मुकाबिला करें, ऐसी स्थिति में हमारा देश नहीं है और अगर आटम बम आप बना भी लेंगे तब भी सुरक्षित हैं, ऐसी बात नहीं है । धन्यवाद ।

SHRI DAHYABHAI V. PATEL (Gujarat): Madam Deputy Chairman, I am grateful to you for having given me this opportunity to speak on the Appropriation Bill. I know that my Party has had[1] its time; in my absence a representative of the Party had spoken already but because 1 have not taken the time of the House for quite some time, I am glad for the indulgence you have shown to me and I am grateful to you.

Looking at th$_e$ Appropriation Bill and the figures of the amounts asked for, one's attention is naturally drawn to the large sums indicated for the Food and Agriculture Ministry, for purchase of foodgrains. T understand the House hag debated the food problem several times. I doubt whether merely debating the food probu this House is going to result in the production of more foodstuffs. Has not our Government taken the bigoted attitude of the ancient Brahmin feat led to the downfall of Hinduism? Has not the Government taken up such an attitude? We have had examples of countries that have secured a high productive potential where there was hardly any production. We have on the one side Israel where they have converted a desert into blooming field. When w$_e$ were in difficulty, when everybody heard of our difficulties, the Consul of Israel came to Delhi, saw the Food Minister and made his offer. He quoted the instance *dt* Israel experts teaching people in Africa l;ow to produce more from the same land. I do not know what we are doing about it. We have the example of one simple agriculturist from Israel, M. Haleri, who came to Sevagram. What he did in Sevagram should be known to people, to at least those who are agriculturists, how, by simple methods without much cost, he was able to produce more. Israel offered to help us to convert Rajasthan, a desert, into blooming fields but like tlie Brahmin, our Government says, "You are a born *shudra.* You cannot learn the *Vedas",* So, Israel is a coun-trv which is *persona non grata* and so we will not learn how to produce m)r$_e$ from them even though people will starve, there will be starvation and there wiH be less production in this country. What is the policy that we are following in this country? For that policy, you are asking this House to sanction crores of rupees. There is also the example of Taiwan on the other side where they grow rice crops following a policy that we are supposed to have followed, the policy of giving land to 'the tiller. After the introduction of that policy of land to the tiller, the farmer has grown prosperous, the country has become prosperous while we have become $_a$ debtor nation begging every year for money and for foodgrains. This is a very sad commentary on the achievements of the Congress Government.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA (Bihar): May I ask a question?

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: Yes, the new convert to the Congress must get it.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: Not the new convert. My hon. friend is just now telling about a country from which he has just returned. May I know whether he knows the amount of money that has flown into that country by way of grants from the United States of America[0]

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: Well, this country has received aid not only from the United States of America but from any country in the world. We have borrowed from

[Shri Dahyabhai V. Patel.]

everywhere and what is the result? It is not a question of getting grants but it is a question of utilising the resources and tlie grants most productively. That is where we have failed and that is where the achievement of the Congress Ministry has been a total zero and that is why we are in this sad difficulty. If we gave land to the r and had followed that policy that Taiwan has followed, we would not have been in these difficulties.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: I am happy that my friend advocates the policy of land for the 'tiller, a policy which his Party has been opposing so far.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: That is not the point. We are now in difficulties. If you have put that policy of giving land to the tiller, I believe you have, at least the side on which you sit now has but then it has not brought in any result. It has not been done efficiently. Whatever you do, whether you get money or anything, you must do it efficiently. I think my good friend is a Hindu. I think the lesson was taught to tis in the Gita many many years ago, in very simple words *"Yoga Karmeshu 'lalam",* whatever you are doing, do it efficiently. By that standard, the Congress Government has failed and that is why we have this difficulty of food. When I went and talked to the Pood Minister after my last visit to Taiwan, he was inclined to do something. When I returned yesterday, I was looking at my post and I received a letter from the Collector of Customs saying that certain literature which has come to me from the Republic of Taiwan relating to the Indo-Taiwan Cultural AssofiiMon have been confiscated and that if I did not go and re-present to him in fifteen days, they will be destroyed. Is it not like the Brahmin who says. "No, you cannot learn from them." Or, is it not like the story that we have heard of the 'ibrary *Tt* Alexandria? The victorious armies went to the General who referred them to the Khalif and asked him what should be done.

SHRI AKBAR ALI KHAN (Andhra Pradesh); That is a wrong story, absolutely wrong.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: It may be wrong, I agree it is wrong.

SHRI AKBAR ALI KHAN: Then, why quote it?

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: It is only illustrative. I am only quoting it as an illustrative point. The story may b_e wrong but this is how the Congress Government is behaving. "What is good knowledge has been stated in the book, that is the new book, and it has not been referred to in the old book. Therefore, destroy it." And they destroyed the library. I am quite willing to be corrected that this story is not correct, has no historical basis but this is what the Congress Government is doing.

شری عبدالغنی - اکبر علی خاں
صاحب - یہ بات تو صحیح ہے نا -

[श्री अब्दुल गनी : अकबर अली खां साहब, यह बात तो सही है न ?]

SHRI DAHYABHAI V. PATEL; You are not prepared to learn from people who have made agriculture a success. Why is the per acre production in India falling? Has anyone thought about it? You are just thinking of getting money from abroad or getting food from abroad. Is this ever going to solve your problem? You cannot utilise whatever money you have got efficiently, the crores of rupees you have put in the public sector projects.

SHRI A. D. MANT. May I ask the hon. Member whether the literature that he brought with him contained anything objectionable? He must have had an opportunity of going through the literature. Was it «aly

t [ ] English translation.

literature dealing with friendship between Taiwan and India?

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: One of the books I brought was given to the Food Minister and he has not found anything irregular in that. One copy I have presented to the Parliament Library. Besides, there were other copies and other literature pertaining to the Indo-Taiwan Cultural Association. It is nothing political and yet the Collector of Customs banned it because of some order issued by some zealous officer who wanted to be friendly to Peking and therefore did not want literature from any other country to come to India.

PROF. M. B. LAL (Uttar Pradesh): I hope no book on agriculture.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: There is one on agriculture.

PROP. M. B. LAL: Was that also banned?

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: That parcel contained it and this is the order I got. These books are lying with the Collector of Customs and if I do not . . .

SHRI AKBAR ALI KHAN: Have you gone through it?

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: Has the Minister gone through it? Have you gone through it, Mr. Akbar Ali?

SHRI AKBAR ALI KHAN: I am asking you because you are defending it.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: I am pointing out how literature coming from Taiwan is banned. Tell your Ministers to behave. Ask them in your Party meetings. We are at war with Peaking but is there any ban on literature from Peking? I want to know this. Communist literature in tons and tons comes to India but is there any ban imposed on that? You impose a ban here in this, when we have to learn and when we are in this situation. I want to know as to why Government did not accept the offer of Israel. We were not at any 1 p.M.war with Israel when they offered to send their experts. Now, I know there are teams from Taiwan working in Africa; there are teams from Israel working in the African countries.

THE MINISTER OF PLANNING (SHRI B. R. BHAGAT): May I know how Taiwan and Israel are relevant in this discussion?

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: This is agriculture. Why don't you look beyond your nose? You are the Minister concerned about the doings of Bank of China and you are the guilty person; your party is guilty of making this country Communist. You are! taking us to communism. You want the Bank of China to come here and to give a lot of money to the elections in favour of the Communists. Your head is not worried when this happens and you think everything is all right. In the answers you give you were shielding them. You do not want to bring them out.

SHRI B. R. BHAGAT: On a point of order, is Bank of China relevant in this discussion?

SHRI DAHYABHAI * V. PATEL: Your interruption, your outlook is more irrelevant and therefore you aggravated me. I was only telling how literature on agriculture, how knowledge offered from other countries to improve our agriculture is being disregarded and being distorted by questions like the ones which the Minister put just now so that people should not know the correct facts. As long as we have Ministers like that this country is never going to progress. You are working with a wrong mind, from a wrong angle. You are not honest to yourself, to your conscience, to your people and to your country.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: I just want a small clarification from the hon. Member. I am very glad he nas been converted to this point of view that the land should belong to the tiller of the soil.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL; I j never said that, Madam. The Congress Party and the new converts to the Congress Party are experts in twisting 'things in a certain way. You have also learnt it.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: I would like to seek this clarification. The hon. Member has all the time been telling us that things have improved in Taiwan because the land belongs to the tiller of the soil. Am I correct? i Secondly, he says that the only way ! to imprc *ve* agriculture is to give the land to the tiller while his party has all the time been opposing land ceilings. They have not been co-operating with our plan to see that the land belongs to the tiller of the soil. Now, will he kindly convert his own party as he has converted himself?

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: Madam, the interruptions are irrelevant, coming from a confused mind, which has been confused from one side to another.

THE DEPUTY CHAIRMAN; He is only asking about what you saw in the place you went.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: But why does he put something in my mouth which I never said? Today the Congress has made the country accept this position that the land is to the tiller. Whether I accept it or not, the country has been made to accept it because it is the policy of the ruling party. But having accepted that, what have you done? If Taiwan has been able to make a success of it, why have you not? Why have you failed? That is what I am trying to tell you. You can do it both ways. I am not saying lhat that is the only way to make agriculture a success. If you want to follow the policy of land to the tiller, you carry it to its logical conclusion but you have failed in that because you are half-hearted. You want to please some of your rich friends, who own big farms like the mill-owners in Ahmedabad. They have big farms which are far above the ceiling. Therefore, Madarn, this confused person with a confused mind is trying to confuse the issue. The policy of land to the tiller has been accepted by them. It is the policy of the Government; it should be carried out efficiently and the Government should see that the result that ought to come out of that policy does come out. Unfortunately it does not Why it does not is explained very well and it will become self-explanatory if the book that I gave to the hon. Food Minister on this subject were studied. I have presented a copy to the Library also and people who want can see it. I thought that more books and more literature of this type were necessary. Therefore I was trying to bring in more of them: whether it is in this parcel that has been confiscated or whether it is in other parcels that are coming later, I do not know. If this is the attitude of the Government, what can happen? That is what I am trying to show.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Your time is up.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: I would request you to be a little indulgent because some of my time has been taken by these interruptions which were absolutely irrelevant. I was trying to point out that these two small countries have made a success of their policies. One is the policy of the land to the tiller In Israel they have made all the different experiments. They have a collective farm; they have Ihe *kibuts;* they have the small peasant proprietors working in the villages. And they have made a success of agriculture by bringing water through a pipe line of 150 miles. If they can make a success of that in

that area, where there is so much shortage of water, why can we not when we have rainfall, when we have large rivers? I say there is something wrong in our planning; there is something drastically wrong with our agriculture; there is something radically wrong with the Government that is at the root of all this. Madam, I am trying to point out that all this :ieeds to be corrected. Until it is corrected we shall have to go on voting large sums of money in this way. It is going to cause more and more inflation because money not properly utilised becomes a burden. It becomes a millstone round our neck. There will be more debt charges, more waste and the prices will go up higher and higher. If inflation is to be arrested the way is not the one which the Congress is following. If we have to learn that lesson tet Us learn it even from these two small countries though I dare say there are many others that have succeeded in agriculture.

THIS DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Bhagat will reply at 2.30 P.M.

The House stands adjourned till 2; 30 P.M.

The House then adjourned for lunch at eight minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at half-past two of the clock, THE DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.

STATEMENT *RE* REPORT (NO\'EMBER 1964) OF THE INDIAN AIR FORCE AIRCRAFT ACCIDENTS COMMITTEE

THE DEPUTY MINISTER m THE MINISTRY OF DEFENCE (DR.). S RAJTJ): Madam Deputy Chairman, on behalf of Shri Y. B. Chavan, I wish to make the following state-mint.

In reply to part (c) of Starred Question No-243 which was answered by him in the House on 5th May, 1964. he had *inter alia* stated that a Committee had been set up under the Chairmanship of the Cabinet Secretary, with the following terms of reference: —

(i) to examine the existing regulations and arrangements: —

(a) for flying and flying safety;

(b) for clearing an aircraft as fit for flying;

(c) regarding the standards of training of a pilot in relation to the tasks he is entrusted with;

(ii) to examine the adequacy of the above regulations and arrangements and their implementation, and

(iii) to recommend remedial measures, if any, to minimise accidents.

A Report prepared by the Committee excluding operational data is laid on the Table of the House.

The findings and recommendations of the Committee are under consideration of Government.

THE APPROPRIATION (NO. 6) BILL, 1964—*continued*

SHRI B. R. BHAGAT: Madam Deputy Chairman, the House debated this Appropriation Bill and I am glad that the hon. Members who participated in this dwelt on various matters, except, of course the hon. Member who spoke last. I am sorry, Madam, to say that whatever relevance he had in his points, he lost them in the excitement that he created. I can understand his excitement. Frobably the books that were held up by the customs and the letter he got probably irritated him or excited hirn . . .